# परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, नरौरा (बुलन्दशहर)
## हिन्दी–11
## पुस्तक– वितान भाग–1
## पाठ– राजस्थान की रजत बूँदे
## मॉड्यूल–1/1

## पाठ का सार

**रेगिस्तान में मीठे पानी का स्त्रोत कुंई–** प्रसिद्ध पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र द्वारा रचित पाठ में राजस्थान की रेतीली भूमि में पानी के स्त्रोत कुंई का वर्णन किया गया है। किस प्रकार राजस्थान में लोगों ने पानी के लिए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके जीवन सरल बना लिया है, इस पर पाठ में चर्चा की गई है। पाठ का सार इस प्रकार है–

**रेत में पानी की तलाश–** रेगिस्तान में रेत ही रेत वर्षा न के बराबर होती है। वर्षा अधिक भी हो तो रेत उसे सोख लेती है। यहाँ रेत के नीचे खड़िया पत्थर की पट्टी बिछी हुई है। यह पट्टी पानी को अधिक नीचे नहीं जाने देती। इस पट्टी के नीचे का पानी खारा है। खारे पानी में मिलने के बाद यह पानी पीने लायक नहीं रहता। लोगों ने वर्षों के अनुभव के आधार पर पानी को खड़िया पत्थर की पट्टी से पहले प्राप्त करने का उपाय खोज निकाला। इसी प्रयास का परिणाम था– कुंई का निर्माण

**कुंई–निर्माण की प्रक्रिया–** राजस्थान में कुंई का निर्माण करने वाले लोगों को चेलवांजी या चेजारो कहा जाता है। ये लोग बड़ी सफाई से इस कला को अन्जाम देते हैं। मुश्किल से चार–पांच हाथ के घेरे की जगह उसी अनुपात में तीस से साठ हाथ गहराई तक उतारना और साथ में चिनते जाना बड़ा कठिन काम है। चेजारो भूमि के अन्दर गर्मी को सहन करते हुए भीड़–भरी जगह में कुंई का निर्माण करते हैं। नीचे मिट्टी की खुदाई बसौली से की जाती है। खुदी हुई मिट्टी को बाल्टी के सहारे ऊपर भेज दिया जाता है। ये लोग अपनी जान खतरे में डालकर दूसरों की प्यास बुझाने के लिए पानी का स्त्रोत बनाते है।

**कुएँ और कुंई में अन्तर–** कुंई , कुएँ का ही छोटा रूप होती है। कुआँ व्यास में कुंई से बड़ा होता हैं। दोनो की गहराई लगभग समान होती है। कुंई की गहराई नीचे खड़िया पत्थर की स्थिति पर निर्भर करती है। कुएँ में पानी भूजल से मिलता है अर्थात् भूमि के नीचे स्थित पानी को पाने के लिए कुएँ का निर्माण किया जाता है। इसके विपरीत कुंई में पानी का स्त्रोत भूजल नहीं होता। यह चारों ओर की रेत की नमी सोख कर पानी इकट्ठा करने का साधन है। यहाँ की भूमि में रेत के कण छोटे होते है जो आपस में चिपकते नहीं हैं। यही कारण है कि इस भाग में जितनी भी वर्षा होती है सारी की सारी रेत मे समा कर बदल जाती है। इसी नमी को कुंई के माध्यम से पानी के रूप में प्राप्त किया जाता है।

**राजस्थान में पानी के रूप–** लेखक के अनुसार पानी के कई रूप है। पहला रूप है– पालरपानी । यह धरातल पर बहने वाला वर्षा का पानी है। दूसरा है पातालपानी ये भूमि के नीचे पाया जाता है। यह प्रायः खारा होता है। इन दोनों के बीच

तीसरा रूप है – रेजाणीपानी । धरातल के नीचे लेकिन भूजल में न मिलकर नमी के रूप में बीच में रह जाने वाला पानी ही रेजाणी है। इसी पानी को कुंई के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।

**कुंई की सिचांई के ढंग–** चेजारो कुंई की खुदाई के साथ–साथ उसकी चिनाई का काम भी करते है। थोड़ी सी खुदाई करके उस हिस्से को पक्का किया जाता है ताकि मिट्टी धसके नहीं । कहीं–कहीं ईंटो की चिनाई नहीं हो पाती। उन जगहों पर एक खास तरह की घास का रस्सा बनाकर खोदी गई जगह में डाला जाता है । इस तरह के रस्से को गोलाई में घेरा बनाकर नीचे तक ले जाया जाता है। इस रस्सी की वजह से चारों तरफ की मिट्टी जमी रहती है। कुछ जगहों पर ये घास भी नहीं मिलती । वहाँ पर लम्बे–लम्बे लट्ठों को एक दूसरे में उलझाकर मिट्टी को ढहने से रोका जाता है।

**कुंई निर्माण की सफलता का उत्सव–** पुराने समय में कुंई के सफलतापूर्वक निर्माण पर त्यौहार जैसा माहौल होता था। चेलवांजी को कई तरह के उपहार दिये जाते थे। उन्हे तीज त्यौहारों पर विवाह के अवसरों पर सम्मानित किया जाता था। मगर आजकल समय बदल गया है। हर काम मजदूरी देकर करा लिया जाता हैं।

**कुंई में पानी उपयोग करने के तरीके–** कुंई में पानी की क्षमता बहुत कम होती है। दिन–रात के समय इसमें दो–तीन घड़े भरने लायक पानी इकट्ठा हो जाता है। कुंई की गहराई से पानी निकालने के लिए छोटी बाल्टी या चड़स का प्रयोग किया जाता है। ऊपर मुहाने पर चरखी या घिरनी लगा दी जाती है। इस चरखी के कारण ऊपर पानी खिचने में अधिक जोर नही लगता। प्रत्येक कुंई में मुंह को ढककर रखा जाता है। पानी निकालने के समय मुंह से लकड़ी का ढक्कन हटाकर पानी निकालते है। बाद में ये ढक्कन बन्द कर दिया जाता है।

**कुंई सार्वजनिक सम्पत्ति–** कुंई राजस्थान के खड़िया पत्थर वाले क्षेत्र के लगभग हर घर में मिल जाती है। सबकी निजी सम्पत्ति होते हुए भी वह सार्वजनिक सम्पत्ति मानी जाती है। इन पर ग्राम पंचायतों का नियंत्रण रहता है। किसी नयी कुंई के लिए स्वीकृति कम दी जाती है। इसका कारण है, भूमि के नीचे की नमी का अधिक विभाजन होना। जितनी अधिक कुंई होंगी उतना ही नमी का बंटवारा हो जाता है।

**खड़िया पट्टी क्षेत्र–** राजस्थान में सब जगह रेत के नीचे खड़िया पत्थर नहीं है। यह पट्टी चूरू, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर आदि क्षेत्रों में है । यही कारण है कि इस क्षेत्र के गांव में लगभग हर एक घर में कुंई है।

**द्वारा–**

**नवीन कुमार भारंगर**

**स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी**

**परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, नरौरा (बुलन्दशहर)**